आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16
प्रकाशन की तिथि–2 मार्च 2014

सृष्टि संवत्- 1, 96, 08, 53, 114
युगाब्द-5114, अंक-81-69, वर्ष-7,
फाल्गुन कृष्ण पक्ष, मार्च -2014
शुल्क- 5/ रुपये प्रति, द्विवार्षिक शुल्क-100/ रुपये
डाक प्रेषण तिथि : 5-6 मार्च, कुल पृष्ठ-8

प्रेषक : सम्पादक, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्ष गुरुकुल, टटेसर जौन्ती, दिल्ली-81

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com सम्पर्क सूत्र: 9350945482 Web: www.aryanirmatrisabha.com

संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य' सह-संपादक : आचार्य सतीश

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः।। –ऋ० १।१।६।४

व्याख्यान–हे वाक्पते! सर्वविद्यामय! "नः" हमको आपकी कृपा से "सरस्वती" सर्वशास्त्रविज्ञानयुक्त वाणी प्राप्त हो "वाजेभिः" तथा उत्कृष्ट अन्नादि के साथ वर्त्तमान "वाजिनीवती" सर्वोत्तम क्रियाविज्ञानयुक्त "पावका" पवित्रस्वरूप और पवित्र करनेवाली सत्यभाषणमय मङ्गलकारक वाणी आपकी प्रेरणा से प्राप्त होके आपके अनुग्रह से "धियावसुः" परमोत्तम बुद्धि के साथ वर्त्तमान निधिस्वरूप यह वाणी "यज्ञं वष्टु" सर्वशास्त्रबोध और पूजनीयतम आपके विज्ञान की कामनायुक्त सदैव हो, जिससे हमारी सब मूर्खता नष्ट हो और हम महापाण्डित्ययुक्त हों।।

सम्पादकीय

ऋषि दयानन्द की जय

ऋषिवर दयानन्द का जन्म फाल्गुन कृष्ण दशमी संवत् 1881 में हुआ था, अर्थात् एक सौ नवासी (189) वर्ष पूर्व, उस समय परिस्थिति अत्यन्त विषम थी, सूक्ष्म से सूक्ष्म विषयों पर क्यों (कस्मात्) का प्रश्न खड़ा करने वाले दार्शनिक ऋषियों के इस देश में परम्परा के नाम पर रूढ़ीवाद, अन्धविश्वास घर-घर में जड़ें जमाये बैठा था, पराधीनता, परवशता को ही जन-जन अपना भाग्य मानता था, और अज्ञान, अभाव, आलस्य को नियति की परिणति समझकर जैसे-तैसे जीवन-यापन करने में विश्वास करता था, लेकिन ऐसा क्यों? इसका कारण क्या है? यह सोचना ही जैसे पाप था। सूर्य तब भी पूर्व से ही उदय होता था, लेकिन तर्क के प्रकाश का प्रादुर्भाव पश्चिम दिशा से था। और वह भी उसी कुल में, जिसमें लोगों ने अपनी श्रेष्ठता को जन्मसिद्ध मान लिया था, और पुरुषार्थ से सम्पन्न होने वाले पञ्चमहायज्ञों से लेकर अश्वमेध पर्यन्त के वेदोक्त धार्मिक कर्मकाण्ड, और अष्टांगयोग से प्राप्त भक्ति के आध्यात्मिक कर्म को तिलांजलि देकर मात्र अधिकांशतः काल्पनिक प्रतीकों को, प्रतिमाओं को फल-फूल, स्नान-वसन चढ़ाकर अपने धार्मिक-आध्यात्मिक कर्म की इतिश्री मानकर इसी से स्वर्ग और मोक्ष की आकांक्षा करते और लक्ष्यावधि लोगों को करवाते थे। परिवार सम्पन्न, संसाधन पर्याप्त और स्वजनों के स्नेह में न्यूनता नहीं थी, तब क्यों कोई क्रान्ति की आशा करता? माता-पिता आदि सभी तो सुखपूर्वक अपना जीवन बिता रहे थे, कि मात्र चौदहवें जन्मदिन से चार दिन बाद ही ऋषि परम्परा की 'तर्क क्रान्ति' गहन अंधियारी रात में प्रकट हो ही गयी। जिसका प्रथम सामना सीधा पिता से ही हुआ, और एक बार क्रान्ति ने जन्म लिया तो फिर बुझने की तो कौन कहे, मन्द भी नहीं पड़ी, अपितु हर एक झोंके से प्रदीप्त ही होती चली गयी, झोका चाहे बहिन और प्रिय चाचाजी की मृत्युरूप दुःख का रहा हो, और चाहे तो यौवन की देहली पर पहुँचे युवक को सुखस्वरूप विवाह का। क्रान्ति की ज्वाला प्रखर ही होती गयी। और परिणाम स्वरूप बाईसवें वर्ष में ही गृहत्याग कर, सत्य क्या है? ईश्वर का सच्चा स्वरूप क्या है? ईश्वर कहाँ मिलेगा और किस उपाय से मिलेगा? जैसे प्रश्नों की एक बड़ी भारी गठरी लेकर निकल पड़े। न जाने कैसे-कैसे लोग, साधु-संन्यासी के वेश में उन्हें मिले अर्थात् कुछ विद्वान्, कुछ अविद्वान्, कुछ छली, कुछ कपटी, कोई लोभ से फंसाने वाला और कोई स्वार्थ के गर्त में डालने को तत्पर किन्तु वह कहीं भी न रूके, किसी के वश में नहीं आये, किसी की वेश-भूषा, जटाजूट, नंगधडंग शरीर, हठयोग से कुण्डली जागरण के दावे, सुख-संसाधनों से युक्त मठों की महन्ताई का लालच कोई भी तो उस ऋषि की गति न रोक सका, और आखिर वे सत्य तक पहुँचकर माने, और हजारों वर्षों से जिस सत्य को तिरोहित कर दिया गया था, उसे अपने प्रबल पुरूषार्थ से प्रकट ही नहीं किया, अपितु उस सत्य को स्थापित करने के लिए अपना जीवन भी बलिदान कर दिया। और इसी से आज भी हम सभी **'ऋषिवर दयानन्द की जय'** का उद्घोष करते हैं।

आर्यों! आर्याओं! यह उद्घोष हम सभी को अत्यन्त प्रिय है, लेकिन क्या उद्घोषमात्र से जय होगी? नहीं होगी। जय होगी तो ऋषि के बताये वेदमार्ग पर चलने और समाज को चलाने से होगी, लेकिन वर्तमान की सबसे बड़ी समस्या ही यह है कि-एक ही ऋषि के अनुयायी एक ही सत्यसन्ध ऋषि की 'जय' का गगनचुम्बी उद्घोष करने वाले ही एक स्वर में उद्घोष नहीं कर रहे हैं, कोई प्रथम स्वर में, कोई मध्यम स्वर में, और कुछ लोग पंचम स्वर में उद्घोष कर रहे हैं। परिणाम उल्टा हो रहा है, क्योंकि स्वर विस्वर या अपस्वर हो गया है, और दुर्भाग्य यह कि-स्वर मिलाने को कोई तैयार नहीं दिखाई देता है। शेष अगले पृष्ठ पर

सम्पादकीय का शेष.....

ऋषिवर दयानन्द ने 'आर्य समाज' की स्थापना ही इसी उद्देश्य से की थी कि-जो भी व्यक्ति, महिला हो या पुरूष यदि सत्य की राह चलना चाहे तो मेरी तरह न भटकना पड़े, अपितु बना-बनाया ठौर मिल जाये। लेकिन इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा? जब सत्य की सम्पत्ति से भरे हुए घर पर बैठे लोग द्वार ही बन्द कर दें। और अंधेरे घर में सत्य को असत्य से मिश्रित करने लग जावें। मिश्रित सत्य को ही पूर्ण सत्य मान लेवें, और उस तक भी जिज्ञासु जनों को न पहुँचने देवें, अपितु ऐसे घरों को अर्थात् आर्य समाज भवनों को बेच डालें, नष्ट कर डालें, जीर्ण-शीर्ण होने को छोड़ दें, तब जय कैसे होगी? आज जितने भी देशवासी हमारे ही आत्मीय जन इस सत्य के प्रकाश को देखकर, सुनकर पौराणिकता की पोपलीला से निकलकर जब आने को तैयार हैं, तैयार किये जा रहे हैं, सफलता भी मिल रही है, तब सभी पुराने आर्यों का यह कर्तव्य नहीं बनता कि वे उदारता का परिचय दें, स्नेह से गले लगावें, और बन्द दरवाजों को खोलें। आर्य समाज ऋषि दयानन्द की थाती है, हमें दिया हुआ घर है, प्रत्येक जिज्ञासु के लिए पाठशाला है, आइए मिलकर इसका उद्घाटन करें, **'सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के लिए तत्पर हो जावें'** ऋषिवर के जन्मदिन से अगले जन्मदिन तक अर्थात् एक वर्ष के भीतर सभी सार्वदेशिकों को, सभी प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं को, एक साथ **'ऋषि दयानन्द की जय'** घोष करने के लिए एक करें, संगठित करें। और एक सौ नब्बेवीं जयन्ती एक साथ, एकध्वज तले, एक स्थान पर, एक प्रधान के नेतृत्व में मनावें। और एक स्वर से बोलें:- **'ऋषि दयानन्द की जय'**

सांगोपांगवेद विद्यापीठ आर्ष गुरुकुल

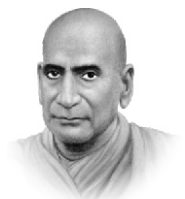

(टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81)

वार्षिकोत्सव

रविवार, 09 मार्च 2014

कार्यक्रम

यज्ञ (हवन).....प्रातः 8.00 से 9.30 बजे तक
ध्वजारोहण एवं राष्ट्रीय प्रार्थना.....प्रातः 9.30 से 10.00 बजे तक
गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का प्रदर्शन एवं उद्बोधन, स्वागत सम्मान :-
प्रातः 10.00 से मध्याह्न 2.00 बजे तक

मुख्य अतिथि- डॉ. योगानन्द शास्त्री (पूर्व विधान सभाध्यक्ष, दिल्ली)
मुख्य वक्ता- डॉ. विरेन्द्र आर्यव्रत (अध्यक्ष, राष्ट्रीय आर्यराज सभा)
समारोह अध्यक्ष- श्री दीनदयाल आर्य (मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा प. बंगाल)
ध्वजारोहण- श्री सुरेन्द्र आर्य (प्रधान-वेद प्रचार मण्डल उ. प. दिल्ली)
आशीर्वचन- स्वामी महेश योगी (संरक्षक-गुरूकुल, टटेसर, जौन्ती)

निवेदक :- समस्त गुरुकुल परिवार

सम्पर्क सूत्र- 08468838494, 09813565796, 09467112171

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की मासिक गतिविधियाँ

बिना सिद्धांतों को समझे, उन्हें धारण किए मनुष्य का निर्माण नहीं होता है। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा निरन्तर वेद द्वारा प्रतिपादित और ऋषि दयानन्द द्वारा व्याख्यायित सिद्धांतों के माध्यम से निर्माण कार्य में संलग्न है। विगत् माह भी महिला व पुरुषों के लिए निम्न आर्य / आर्या निर्माण सत्र लगाए गए।

आर्य प्रशिक्षण सत्र

	स्थान	दिनांक
1.	आर्य समाज भवन, नहर कॉलोनी, बीकानेर, राजस्थान	01-02 फर.
2.	आर्य समाज, न्यू पालम विहार, गुड़गांव, हरियाणा	08-09 फर.
3.	गुरुकुल सूर्यकुण्ड, दातागंज रोड़, बदायुं, उ. प्र.	08-09 फर.
4.	आर्य समाज विशाखा एन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली	08-09 फर.
5.	आर्य समाज, भून गांव, मैनपुरी, उ. प्र.	08-09 फर.
6.	आर्य समाज, गांव कबलाना, झज्जर, हरियाणा	08-09 फर.
7.	रेड कारपेट बैंक्वेट हॉल, करनाल, हरियाणा	08-09 फर.
8.	आर्य पब्लिक स्कूल, हैबतपुर, हिसार, हरि.	15-16 फर.
9.	आदर्श बाल विद्यालय, बहादरपुर जट, हरिद्धार	15-16 फर.
10.	सनातन धर्म मंदिर, सेक्टर-10, पंचकुला, हरि.	22-23 फर.
11.	आर्य समाज, कैथल रोड़, करनाल, हरियाणा	22-23 फर.
12.	एन.एस.एस. कैम्प, कृषि वि. वि., हिसार, हरि.	22-23 फर.
13.	आर्य कॉलेज, नरवाना, जीन्द, हरियाणा	22-23 फर.
14.	रा.उच्चतर विद्यालय, बिठमडा, हिसार, हरियाणा	23-24 फर.
15.	आर्य समाज, मण्डी आदमपुर, हिसार, हरियाणा	23-24 फर.
16.	एन. एस. एस. कैम्प, गांव-डोभी हिसार	27-28 फर.
17.	मूर्तिदेवी आर्य समाज, नजफगढ़, दिल्ली	01-02 मार्च
18.	संस्कार विद्यापीठ, टीकरी, बागपत, उ. प्र.	01-02 मार्च

आर्या प्रशिक्षण सत्र

1.	दयानन्द उच्च विद्यालय, फिरोजपुर, झिरका, मेवात, हरि.	08-09 फर.
2.	संजय गांधी कॉलेज, धनौरा जाटान, कुरुक्षेत्र, हरि.	08-09 फर.
3.	ताऊ देवीलाल कॉलेज, सिवाहा, पानीपत, हरि.	12-13 फर.
4.	आर्य सदन, कृष्णा कॉलोनी, भिवानी, हरियाणा	22-23 फर.
5.	आर्य समाज, मण्डी आदमपुर, हिसार, हरियाणा	23-24 फर.

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्रों की सूचना

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आर्य विद्या देने हेतू द्विदिवसीय सत्रों का आयोजन प्रतिमाह अनेक स्थानों पर हो रहा है। सत्रों की जानकारी समय पर सभी को मिल सके इसके लिए आगामी सत्रों की सूचना, जो अब तक निश्चित हो चुके हैं, दी जा रही है। इसके अलावा भी कई सत्र जो बाद में निश्चित होते हैं उन की सूचना एस.एम.एस. द्वारा आर्यों को भेज दी जाती है। सभी आर्यों से यह भी निवेदन है कि सत्रों की तिथियाँ कम से कम एक माह पहले निर्धारित करके सभा के महासचिव आचार्य जितेन्द्र जी से अनुमति ले लें, जिससे उनकी सूचना भी पत्रिका में दी जा सके।

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्र

क्र.सं.	स्थान	दिनांक	सम्पर्क	दूरभाष
1.	हिन्द पब्लिक स्कूल, गांव तितावी, मुजफ्फर नगर उ. प्र.	08-09 मार्च	डॉ. अश्विनी आर्य	
2.	राजपूत चौपाल, गांव-फरल, कैथल, हरियाणा	08-09 मार्च	आर्य बलकार	9467088290
3.	ओ.पी.एस. विद्या मंदिर, करनाल, हरियाणा	08-09 मार्च	आर्य राजकुमार	9416368474
4.	आर्य समाज, दादुपुर, करनाल, हरियाणा	15-16 मार्च	आर्य राजकुमार	9416368474
5.	आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती दिल्ली	16-17 मार्च	आर्य कुलदीप	9911504848
6.	आर्य समाज, गांव-तलाव, झज्जर, हरियाणा	18-19 मार्च	आर्य वेदप्रकाश	9416147217
7.	आर्य समाज, श्योपुर, मध्यप्रदेश	22-23 मार्च	आर्य कृष्ण मुरारी	8103199839
8.	शास्त्री निवास, गांव- पिंगा, गाजियाबाद, उ. प्र.	29-30 मार्च	आर्य सचिन	9634828757
9.	वैदिक गुरुकुल, मधुबनी, बिहार	29-30 मार्च	आचार्य सुशील	8809852187
	आर्या प्रशिक्षण सत्र			
1.	ओ.पी.एस. विद्या मंदिर, करनाल, हरियाणा	08-09 मार्च	आर्य राजकुमार	9416368474
2.	आर्य समाज बड़ौत, उ. प्र.	22-23 मार्च	आर्य सुरेन्द्र पाल	9719540192

आर्य और राजनीति

हे आर्यों, इस लेख के माध्यम से जिस विषय पर हम चिंतन करने जा रहे हैं, वह एक गंभीर विषय है, क्योंकि इसका सीधा संबंध आर्य समाज के विकास व 'कृणवन्तो विश्वमार्यम्' जैसे महान् लक्ष्य से जुड़ा हुआ है।

आर्यों! वर्तमान समय में आर्यों में कुछ आर्य जन व समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग यह मानता है कि आर्य समाज व उससे जुड़े लोगों को राजनीति नहीं करनी चाहिए। इस विषय पर मेरा चिंतन भी इसी विषय से जुड़ी एक घटना से शुरू हुआ। आज से साढ़े तीन मास पूर्व सौभाग्य से आर्य समाज के एक कार्यक्रम में सम्मलित होने का अवसर मिला। आर्यक्रम में उपस्थित मुख्य-मुख्य व्यक्तियों को आर्य निर्मात्री सभा के सत्रों की जानकरी दी और अनुरोध किया कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में लोगों को सत्र में भेजें। युवाओं का उत्साह और उनका नेतृत्व सराहनीय था। परन्तु इसी दौरान एक सज्जन व्यक्ति खड़े हुए जो काफी शिक्षित भी नजर आ रहे थे, उन्होंने कहा-'देखिये जी! हमारा परिवार तो वर्षों से आर्य समाज से जुड़ा हुआ है, और ये बेहद खुशी की बात है कि आर्य निर्मात्री सभा ने आर्य निर्माण के कार्य को युद्ध स्तर पर पूरे भारतवर्ष में चलाया हुआ है, और हम भी अपना सहयोग आपको देंगे लेकिन हमारा सहयोग तब तक ही है जब तक आप समाज के कार्य करेंगे और राजनीति नहीं करेंगे।'

इस प्रकार का परामर्श मेरे लिए काफी दुविधापूर्ण व असमजंस से भरा हुआ था। क्योंकि मेरी दृष्टि से समाज के कार्य करने वाले के लिए राजनीति एक उत्तम साधन है। इसी घटना ने मुझे इस विषय पर विचारने के लिए बाध्य किया कि आखिरकार तर्कसंगत क्या है?

आर्यों, काफी विचार विमर्श व लोगों की राय जानने के पश्चात्, विभिन्न प्रकार के तर्क सामने आये, उनमें से मुख्य जो कि बाकी सभी तर्कों का आधार हैं, निम्नलिखित हैं:-

1. कुछ लोगों का मानना है कि वेद इसकी आज्ञा नहीं देता।
2. कुछ कहते हैं कि आर्य समाज का गठन सामाजिक कार्यों के लिए हुआ था और राजनीति उसमें बाधक है।
3. वर्तमान राजनीति अच्छी नहीं है।

आर्यों ! इन सभी तर्कों पर चिंतन करने से पहले यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि आर्यों का मुख्य सिद्धान्त वेद की आज्ञा मानना है और आर्य समाज का अर्थ आर्यों के समुह से है न कि किसी संस्था व सप्रदाय से है। आर्यों! अगर हम वेद की बात करें तो जहाँ ऋग्वेद ने राजा, शासक की महत्ता व उसके गुणों का वर्णन किया है वही अथर्ववेद में राजसभा का गठन, योग्यता व उसके कार्यों का वर्णन है।

उदाहरणस्वरूप ऋग्वेद कहता है:-

"ता हि श्रेष्ठवर्चसा राजाना दीर्घश्रुत्तमा।
ता सत्पंती ऋतावृध ऋतावाना जनेजने॥

अर्थात् :- वे राजा लोग उत्तम तेजस्वी, अत्यन्त ज्ञानी, उत्तम पालन करने वाले, सत्य और सरलता के साथ बढ़नेवाले प्रत्येक संघ में सत्य के रक्षक हैं।

इसी प्रकार अथर्ववेद में समिति की रचना के बारे लिखा है:-

"ध्रुवोऽच्युतः प्र मृणीहि शत्रुंञ्छत्रूयतोऽधरान्पादयस्व।
सर्वा दिशः संमनसः सुध्रीचीर्ध्रुवाय ते समितिः कल्पतामिह ॥

अर्थ है:- राजा, शासक अपनी उत्तम शासन प्रणाली से सुदृढ़ होकर राज्य करे। सब शत्रुओं का पूरा-पूरा नाश करे, तथा जो शत्रु के समान आचरण करने वाले हो उनको दबाकर रखे। सब लोगों की संघ शक्ति बनाकर राष्ट्र में अपूर्व सामर्थ्य उत्पन्न करे और समिति द्वारा राज्यशासन करे, लोकसमिति की अनुमति से स्वयं सुदृढ़ होकर उत्तम राज्य-शासन करे।

अत: स्पष्ट है कि केवल आर्य अर्थात् श्रेष्ठ लोगों को ही राजनीति करने का अधिकार है। आर्यों! आप स्वयं विचार कीजिये कि क्या मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र, धर्मसंस्थापक श्री कृष्ण जी, क्या वे आर्य नहीं थे? क्या उन्होंने राजनीति नहीं की? महाभारत में श्री कृष्ण ने जिस राजनीतिज्ञ योग्यता का उदाहरण प्रस्तुत किया है वह अतुल्यनीय है, स्वयं में एक उदाहरण है। इसी प्रकार आचार्य विष्णुगुप्त आदि आर्य पूर्वजों ने लंबे समय तक राजनीति में सक्रिय भाग लिया है। आचार्य विष्णुगुप्त द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' वर्तमान राजनीतिज्ञों के लिए भी मार्गदर्शक का काम कर रहा है। परन्तु यह भी सत्य है कि जैसे ही आर्य लोगों व आर्य सिद्धान्तों का राजनीति में अभाव हुआ है हम कभी मुसलमानों के और आगे चलकर ब्रिटिश जैसे विदेशी आक्रान्ताओं के गुलाम हो गये।

-आर्य विकास इंजीनियर, छारा, झज्जर, हरियाणा

आर्यों! स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जिस समय आर्य समाज की स्थापना की उस समय हम पराधीन थे और आर्य सिद्धान्त समाज से प्राय: लुप्त हो चुके थे। ऐसे समय स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पहली बार पूरे भारतवर्ष को 'स्वराज्य' शब्द से परिचित कराया, जो आगे चलकर भारतीय राजनीति में एक धुरी का काम कर रहा है। यह उनकी दूरदृष्टी ही थी कि उन्होंने आर्य निर्माण के लिए आर्य समाज का गठन किया क्योंकि वेद कहता है:-

' आ यद् वामीयचक्षसा मितं वयं चं सूरयः।
व्याचिस्ते बहुपाच्ये यतेमहि स्वराज्ये ॥'

अर्थात् स्वराज्य के लिए 1.मित्र दृष्टि वाले लोग, 2. विस्तृत दृष्टि के लोग और 3. ज्ञानी लोग, ये तीन प्रकार के लोग योग्य होते हैं। अर्थात् 1. आपस में झगड़ने वाले, 2. संकुचित दृष्टिवाले, 3. अज्ञानी लोग स्वराज्य चलाने में समर्थ नहीं हो सकते। इससे स्पष्ट है कि आर्य समाज के गठन में उनका एक उद्देश्य आर्य निर्माण कर स्वराज्य व सुशासन लाने का रहा था। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में राजनीति पर एक पूरा समुल्लास लिखा है। वे जानते थे कि विदेशी अक्रान्ताओं से स्वतंत्रता तो हमें मिल जायेगी, परन्तु अगर उस 'स्वराज्य' को चलाने के लिए श्रेष्ठ आर्य व्यक्ति नहीं होंगे तो वह 'स्वराज्य' सुशासन की बजाय कुशासन का पर्याय बन जायेगा और यही कारण था कि उन्होंने उस समय आर्य निर्माण पर बल दिया। आप स्वयं विचार कीजिये कि अगर स्वामी दयानन्द सरस्वती आर्यों को राजनीति से दूर रखना चाहते तो क्या वे राजनीति प्रकरण के बारे इतना विस्तार पूर्व लिखते? भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के स्तंभ माने जाने वाले गोपालकृष्ण गोखले, लाला लाजपत राय, वीर सावरकर, भगत सिंह, क्या राजनेता नहीं थे? आर्यों ! अत: स्पष्ट है कि न तो स्वामी दयानन्द ने कभी आर्यों को राजनीति से दूर रहने को कहा और न ही उनके ग्रन्थ में ऐसा वर्णन है। इसके विपरीत स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यों का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

अब शंका होती है कि क्या स्वतन्त्रता के बाद और वर्तमान परिस्थितियों में आर्यों को राजनीति से दूर रहना चाहिए?

हे आर्यों! अब हम एक अति गंभीर व ध्यान देने योग्य विषय पर चिंतन करने जा रहे हैं, अत: तर्कसंगत सोचें और विचार करें। आर्यों! वर्तमान में भारत एक गणतन्त्र है, हमारी शासन प्रणाली संविधान के अनुच्छेदों के अनुसार जनता के द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा चलाई जाती है। जनता के द्वारा चुने हुये राजनेता हमारे लिए कानून व अन्य नियम बनाते हैं। अत: यह निश्चित है कि हमें समाज में, व्यवस्था में या अन्य किसी क्षेत्र में भी कोई परिवर्तन या बदलाव लाना होगा। दूसरा उस विषय से सबन्धित कानून व नियमों में बदलाव लाना होगा।

हे आर्यों! आप इस बात से तो सहमत होंगे कि राष्ट्र की उन्नति व खुशहाली के लिए वर्तमान समय में व्यवस्था परिवर्तन जरूरी है, और व्यवस्था परिवर्तन के लिए जरूरी है हमारे चुने हुए प्रतिनिधि (राजनेता) श्रेष्ठ आचरण व आर्य सिद्धान्तों से संपूर्ण हों और वे देश की व्यवस्था को चलायें।

आज आर्य निर्मात्री सभा द्वारा हजारों आर्यों का निर्माण प्रतिवर्ष हो रहा है अर्थात् व्यक्ति परिवर्तन की दिशा में हम कार्य कर रहे हैं। परन्तु आगे आप विचार कीजिए?

भ्रष्टतन्त्र के आधार पर खड़ा तथाकथित-गणतन्त्र

–आर्या छवि, गांव-सिवाहा, जीन्द

वैदिक संस्कृति नष्ट करने को, रचा ये षड्यंत्र है,
झूठा ये गणतन्त्र है।
राजनीति यहाँ लूटनीति है, धन जनक एक यन्त्र है,
झूठा ये गणतन्त्र है।
धर्मभूमि पड़ी है बंजर, उपजाऊ भ्रष्टतन्त्र है,
झूठा ये गणतन्त्र है।
लूटतन्त्र के चक्रव्यूह में फंसा हुआ जनतन्त्र है,
झूठा ये गणतन्त्र है।
इस चक्रव्यूह को भेदने का आर्यराज ही मंत्र है,
जो वास्तविक गणतन्त्र है।

सन् 1947 दिनांक 15 अगस्त को समूचे भारतवर्ष में इस बात की घोषणा कर दी गई कि राष्ट्र को स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई है। सत्ता के लोभी व देश के प्रति संवेदनहीन कुछ लोगों ने अंग्रेजों के साथ उनके द्वारा किए गए 'Transfer of power' अर्थात् 'सत्ता के हस्तान्तरण' को स्वतन्त्रता का नाम दे दिया व अपना और पाश्चात्तय संस्कृति का वर्चस्व स्थापित कर दिया। इस तथाकथित आजादी के बाद लगातार राष्ट्र संघर्ष कर रहा था व खून के आँसू रो रहा था। जिस प्रकार रोते हुए बालक को खिलौना देकर बहला दिया जाता है ठीक उसी प्रकार 26 जनवरी 1950 को भारतवर्ष के हाथों में संविधान रूपी एक खिलौना पकड़ाकर उसे शांत करने का प्रयास किया गया। संविधान का आवरण ढक कर देश को घोषित कर दिया गया एक गणतन्त्र राष्ट्र अर्थात् अब जनता को अपने प्रतिनिधि स्वयं चुनने का अधिकार था।

यह राष्ट्र आर्यावर्त्त था तो विश्व का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक राष्ट्र था, जहाँ एक योग्य व श्रेष्ठ व्यक्ति को ही शासक बनने का अधिकार था। वंशवाद की परम्परा का वहन नहीं किया जाता था। अपितु राज्य की भलाई के लिए प्रजा में से भी एक योग्य उम्मदीवार को चुनकर शासक बनाया जाता था। 1950 में जब पुनः राष्ट्र को गणतन्त्र कहा गया तो उम्मीद जगी कि अब भारत पुनः आर्यावर्त्त की राह पर आगे बढ़ेगा, परन्तु परिणाम कुछ और ही निकला, यह गणतन्त्र राष्ट्र उन्नति की अपेक्षा अवनति की राह पर चल पड़ा। इस मिथ्या लोकतन्त्र की प्रेरणा का स्रोत फ्रांस को बताया गया। जो देश स्वयं इतने समय तक, सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश रहा हो वह किसी और से लोकतन्त्र की प्रेरणा ले। इसके पश्चात लोकतन्त्र को सबसे बड़ी चोट उस समय पहुँची जब जनादेश सरदार वल्लभभाई पटेल को देश का प्रधानमंत्री बनाना चाहता था परन्तु प्रजा की इच्छा के विरूद्ध जवाहर लाल नेहरू को प्रधानमंत्री पद सौंप दिया गया। अब स्पष्ट रूप से यह हमारे सामने था कि यह गणतन्त्र मात्र एक छलावा है, भ्रम है। उस समय से आज तक राष्ट्र में गणतन्त्र शब्द का उपहास ही बनाया जा रहा है। प्रजातन्त्र में प्रजा की भलाई को प्राथमिकता दी जाती है, परन्तु यहाँ तो प्रजातंत्र के स्थान पर लूटतन्त्र+धनतन्त्र+भ्रष्टतन्त्र की एक ऐसी व्यवस्था स्थापित की गई जो राष्ट्र के लिए प्राणघातक सिद्ध हुई।

आइए विचार करें कि ऐसा क्यों हुआ कि दुनिया में सबसे विस्तृत संविधान होते हुए भी हमारा गणतन्त्र, लूटतंत्र में परिवर्तित हो गया। वास्तव में संविधान लिखने का उद्देश्य था-साफ-साफ यह दर्शाना कि स्वतंत्रता के प्रापयिता स्वयं अंग्रेज थे। किसे पता था संविधान निर्माण की आड़ में संस्कृति नष्ट करने का कितना बड़ा षड्यंत्र रचा जा रहा था। वर्तमान भारतीय संविधान की रचना संविधान सभा जिसका गठन जुलाई 1946 में किया गया। अब जरा इसके सदस्यों की संख्या जानें जो 389 थी, जिसमें से 292 बिट्रिश प्रान्तों से, 93 देशी रियासतों से व 4 कमीश्नर क्षेत्रों के प्रतिनिधि थे। संविधान के स्रोत देश जोकि ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, जापान, सोवियत संघ, द० अफ्रिका, आयरलैण्ड, जर्मनी, फ्रांस है। वह राष्ट्र जो विश्व गुरु था, जिसने ज्ञान का पुंज बनकर ज्ञान का प्रकाश दुनिया के कोने-कोने तक किया, वहाँ के ज्ञान, विद्या, वेद, शास्त्रों को व्यर्थ मानकर, उन्हें इस विस्तृत संविधान में कोई स्थान नहीं दिया गया। जिसे सबसे ज्यादा स्थान मिला वह थी पाश्चात्य संस्कृति। अवश्य ही संविधान के रचियता दूरदृष्टा रहे होंगे, पर दूरदृष्टा देश के हित के लिए नहीं अपितु अहित के लिए। वह आचार्य चाणक्य जिन्होंने एक साधारण से बालक को विक्रमादित्य में परिवर्तित का दिया था, उनके नीतिशास्त्र, वेद, महाभारत व मनुस्मृति में बताए गए राजधर्म का समावेश जब इस संविधान में नहीं किया गया तो कैसे यह एक सशक्त लोकतन्त्र के ढ़ाँचे का निर्माण करता।

इस विषाक्त गणतन्त्र रूपी वृक्ष के फल आज तक शुद्ध गणतन्त्र व राजधर्म को विकसित नहीं होने दे रहे। राजनीति का स्वरूप विकृत हो चुका है, शीर्ष पदों का चुनाव योग्यता के आधार पर नहीं, शराब व पैसे के लोभ के आधार पर होता है जिसके फलस्वरूप आज आयोग्य शासक उच्च सिहासनों पर बैठ कर देश को गिरवी रख रहे हैं। राष्ट्र को बचाने का केवल एकमात्र उपाय है-श्रेष्ठ पदों पर श्रेष्ठ लोगों अर्थात् आर्यों की नियुक्ति। महर्षि मनु, मनुस्मृति में कहते है-

'त्रैविद्येभ्यस्त्रयीं विद्यां दण्डनीतिं च शाश्वतीम्।
आन्वीक्षिकीं चात्मविद्यां वार्त्तारम्भांश्च लोकतः॥

अर्थात् राजा और राजसभा के सभासद् तब हो सकते हो जब वे चारों वेदों की कर्मोपासना ज्ञान विद्याओं के जाननेवालों से तीनों विद्या सनातन दण्डनीति न्यायविद्या, आत्मविद्या अर्थात् परमात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव, रूप को यथावत् जानने रूप ब्रह्मविद्या और लोक से वात्ताओं का आरम्भ सीखकर सभासद् हो सकें।

निष्कर्षतः हम यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि जब तक इस राष्ट्र में पुनः आर्यों का साम्राज्य नहीं होगा, पुनः श्रेष्ठ लोग श्रेष्ठ पदों पर नहीं निर्वाचित होंगे, तब तक लोकतन्त्र, जनतन्त्र, प्रजातन्त्र जैसे शब्द मात्र स्वपन बनकर रह जाऐगें। अतः आर्यों पूरे राष्ट्र को बचाने हेतू, अपनी वैदिक संस्कृति की रक्षा हेतु, गणतंत्र के स्वपन को साकार करने हेतू और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' के ध्येय को प्राप्त करने हेतु।

'उत्तिष्ठत जागृत प्राप्यवरान्नि बोधत्।

आर्य समाज कतलूपुर

का 7 वाँ

वार्षिकोत्सव

बलिदान दिवस एवं यज्ञशाला शिलान्यास

रविवार, 23 मार्च 2014

समय :- प्रातः 8 बजे से दोपहर 1 बजे तक
समारोह स्थल :- राजकीय विद्यालय, गांव-कतलूपुर (सोनीपत)
मुख्य वक्ता :- आचार्य परमदेव मीमांसक जी
आमंत्रित अतिथि- वैदिक विद्वान, नेतागण व क्षेत्र के गणमान्य व्यक्ति
आयोजक :-समस्त ग्रामवासी, कतलूपुर (सोनीपत)
सम्पर्क सूत्रः-09991047633, 09999802960, 08860732422
09812653712, 07838335251
हजारों की संख्या में पहुँचकर संगठन शक्ति का परिचय दें।

आर्य संस्कृति

–ब्र. अंकुर आर्य, गुरुकुल टटेसर-जौन्ती, दिल्ली

आर्य संस्कृति ही क्यों? हिन्दू क्यों नहीं? संस्कृति राष्ट्र का प्राण है। जैसे मानव शरीर में जब तक प्राणों का आवागमन होता रहता है तब तक वह जीवित है। इसी भाँति संस्कृति राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधे रखती है। हमारी संस्कृति आर्य संस्कृति है और इसे वैदिक संस्कृति भी कहते हैं। तदनुसार हमारे देश का नाम आर्यावर्त्त है। आर्यों ने इसे आबाद किया। चार वेद, चार उपवेद, छः दर्शन, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद, वेदों के अनुसार स्मृति, धर्म ग्रन्थ रामायण, महाभारत इत्यादि आर्य संस्कृति के ज्ञान के स्रोत हैं। मर्यादापुरूषोत्तम राम, योगीराज कृष्ण, दर्शनों के प्रवक्ता आचार्य गौतम, कपिल, कणाद्, पंतजलि, जैमिनी और महर्षि व्यास एवं अन्य धर्म ग्रन्थों के प्रणेता ऋषि, मुनि और चक्रवर्ती सम्राट आर्य संस्कृति के उज्ज्वल रत्न हैं। जो युगों-युगों से आर्य संस्कृति का दिव्य सन्देश संसार को दे रहे हैं। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा इन्हें ही अपना आदर्श एवं मार्गदर्शक मानकर कार्य कर रही है।

इसके विपरीत कुछ संगठन वेद-गिरी शृंग से प्रवाहित आर्य संस्कृति की पावन गंगा को त्याग कर आततायी विदेशी आक्रमणकारियों की देन वर्तमान समय में हिन्दू नाम से चिपक कर बैठे हैं। जबकि यह सत्य है कि वर्तमान समय में हिन्दू से सम्बोधित किये जाने वाले सभी आर्यवंशी हैं और उनकी संस्कृति भी आर्य संस्कृति है। हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थों में कहीं पर भी हिन्दू नाम नहीं आया। यहाँ तक कि तुलसीदास ने भी इसकी चर्चा नहीं की वस्तुतः यह नाम अरबी फारसी भाषाओं का है जिसके अर्थ उनके शब्दकोषों में चोर, डाकू, गुलाम, काफिर, काला, अशुभ इत्यादि है। वो हमें इन्हीं नामों से सम्बोधित करते थे। लोक में देखा जाता है कि किसी का नाम परिवर्तित कर बोलने से कुछ दिन तो वह विरोध करता है परन्तु कालान्तर में उसे अपभ्रंश नाम से चिढ़ या ग्लानि नहीं रहती और वह इसी परिवर्तित हुए नाम से व्यवहार में प्रवृत्त होने लगता है। इसी भाँति विदेशियों द्वारा सम्बोधित हिन्दू नाम को ही हम अपना वास्तविक नाम समझ बैठे। जब नाम ही हिन्दू नहीं तो हिन्दू संस्कृति का कोई भी अर्थ नहीं रह जाता। सम्वत् 1926 ई० को काशी में 46 पण्डितों ने स्वयं मिलकर व्यवस्था पत्र लिखा था कि हमारा नाम हिन्दू नहीं हैं। इस पर स्वामी विशुद्धानन्द एवं बालशास्त्री के हस्ताक्षर भी थे। ये दोनों अपने समय में काशी के सबसे बड़े पण्डित समझे जाते थे। और इन्होंने स्वामी दयानन्द जी से भी शास्त्रार्थ किया था। अतः गर्व से कहो हम हिन्दू नहीं आर्य हैं।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा तेज और क्षात्र बल से सम्पन्न नवयुवकों का निर्माण करने वाली राष्ट्रीय और सामाजिक सभा है। आर्य संस्कृति का जनसन्देश जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प, चरित्रवान् नवयुवकों का निर्माण कार्य, देश धर्म की रक्षार्थ समर्पित जीवन, विश्वबन्धुत्व की भावना इस सबका समन्वित स्वरूप राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा में ही देखने को मिलेगा अतः आओ हम सब राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सदस्य बनकर अपने जीवन को महान बनावें और आर्य संस्कृति अपनावें।

जनपद बागपत में आर्य महासम्मेलन

2 फरवरी 2014 को आर्य महासम्मेलन का आयोजन जनपद बागपत के तत्वावधान में आर्य समाज टटीरी की अगुवाई में किया गया। आर्य-महासम्मेलन का शुभारम्भ यज्ञ द्वारा किया गया। आर्य सम्मेलन में आशा से भी कहीं अधिक आर्यगणों ने लगभग 2200 की संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम में अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे। जिनमें आचार्य परमदेव मीमांसक जी, आचार्य हनुमत् प्रसाद उपाध्याय जी, आचार्य योगेश जी चरथावल, आचार्या डॉ. कल्पना जी बिजनौर, श्री देवेन्द्र पाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र., आर्य भजनोपदेशक कुलदीप जी बिजनौर मुख्य थे। कार्यक्रम का संचालन आर्य ब्रिजेश सिंह ने किया। कार्यक्रम में आर्य नरेन्द्र जी प्रधान, उ. प्र. आर्य निर्मात्री सभा, मा. साहब सिंह जी, आर्य सत्यवीर जी टीकरी, आर्य मलखान जी मोदीनगर, आर्य राजेन्द्र जी बिजनौर, आर्य ब्रिमेश जी टटीरी, आर्य राजसिंह जी टटीरी, आर्य अवनीश जी टटीरी, आर्य सोदान जी बदरखा मुख्य रूप से उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त जनपद बागपत की लगभग 60 आर्य समाजों के प्रतिनिधियों के साथ-साथ अनेक आर्यगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पूर्व पुलिस कमिश्नर (मुम्बई) श्री सत्यपाल आर्य भी उपस्थित रहे। आर्य सम्मेलन में उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए देवेन्द्र पाल वर्मा ने कहा कि आर्य समाज की विश्व को श्रेष्ठ बनाने की मुहिम को तेज करने की आवश्यकता है। आर्यों ने देश की आजादी से लेकर अन्य सामाजिक सुधारों में भी अग्रणी भूमिका निभाई है। आर्य समाज आज भी उतना ही प्रासांगिक है जितना पहले था।

आचार्य हनुमत् प्रसाद जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आर्य का अर्थ है 'श्रेष्ठ' और श्रेष्ठ नारों से नहीं अपितु चरित्र से बना जाता है। हम नारे लगाते रहें और हमारे व्यवहार में श्रेष्ठता न दिखे तो हम आर्य नहीं बन सकते। आचार्य योगेश जी ने युवाओं का आह्वान किया कि सोते-सोते तो सदियां बीत गयी और बीत जायेगीं, हम यदि अब भी नहीं जागे तो इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा। इस देश का ही नहीं विश्व के मार्गदर्शन का भार आर्य युवाओं पर है। पर यदि युवा खुद ही दिग्भ्रमित होगा तो दूसरों को कैसे दिशा दे पायेगा? आचार्य परमदेव मीमांसक जी जो स्वयं लाखों आर्यों के प्रेरणास्रोत हैं ने अपने उदबोधन में राष्ट्र की पीड़ा को व्यक्त किया। राष्ट्र की पीड़ा को दूर करने का सिर्फ एक मार्ग है कि हम पहले स्वयं सिद्धान्तों को ठीक से जानकर और उन्हें धारण कर आर्य बनें तथा फिर दूसरों को बनाएं। यदि हम आर्य समाज में जाते हैं तथा आर्य सिद्धान्तों से अनभिज्ञ हैं तो ये स्थिति अधिक घातक है। सिद्धान्तों की जानकारी के अभाव में व्यक्ति अपनी गलत मान्यताओं को ही सिद्धान्त के रूप में प्रतिस्थापित करने का प्रयास करता है और यहीं से पतन प्रारम्भ हो जाता है। उन्होंने आह्वान किया कि जो लोग आर्य सिद्धान्त जान चुके हैं उनकी जिम्मेदारी अधिक है क्योंकि उन्हें स्वयं तो संभलकर आगे बढ़ना ही है साथ ही साथ अन्यों को भी बढ़ाना है। आचार्य जी ने कहा कि आर्य बनाना विश्व का श्रेष्तम और पुण्य का कार्य है।

कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह ने सभी वक्ताओं को तन्मयता के साथ सुना तथा उस अद्वितीय अनुशासन का परिचय दिया जिसकी हम आर्यों से आशा रखते हैं। कार्यक्रम के अन्त में आर्य सहदेव जी बाघू ने सभी अतिथियों एवं आचार्यों को आभार और धन्यवाद प्रेषित किया।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट पर उपलब्ध

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट www.aryanirmatrisabha.com व www.aryanirmatrisabha.org से भी पत्रिका को प्राप्त किया जा सकता है। पाठकगण पत्रिका को उपरोक्त साईट से डाऊनलोड कर पढ़ सकते हैं व सत्रों की सूचना भी प्राप्त की जा सकती है।

सूचना

सभी आर्यगणों से अनुरोध है कि राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों सम्बन्धी सूचना पत्रिका के ई-मेल पते :- krinvantovishwaryam@gmail.com पर भेंजे साथ ही सम्बन्धित चित्र (फोटो) भी इसी पते पर भेज देंवे जिससे कि उनको समय पर पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	1 मार्च	दिन-शनिवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-बसन्त	नक्षत्र-शतभिषा
पूर्णिमा	16 मार्च	दिन-रविवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-बसन्त	नक्षत्र-पूर्वाफाल्गुनी
अमावस्या	30 मार्च	दिन-रविवार	मास-चैत्र	ऋतु-बसन्त	नक्षत्र-उत्तराभाद्रपद
पूर्णिमा	15 अप्रैल	दिन-मंगलवार	मास-चैत्र	ऋतु-बसन्त	नक्षत्र-चित्रा

लेखमाला–10

डेरावाद : सैद्धान्तिक विश्लेषण

-दयानन्द आर्य, बिठमढ़ा, हिसार

प्रश्न : 74 सतगुरु न केवल अपने मन को देख सकते, बल्कि दूसरों के मन का भी अध्ययन, उनके कार्य व्यवहार का निरीक्षण भी कर सकते हैं। वे विज्ञान के सम्पूर्ण क्षेत्र से परिचित हैं। पृ. 311-12

टिप्पणी : दूसरों के मन का अध्ययन-निरीक्षण का दावा या चमत्कार विज्ञान व तथ्यों की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। जो ये तथाकथित सतगुरु ऐसे होते तो इतिहास में विभिन्न सतगुरुओं, उनके शिष्यों के साथ हुए कपट-धोखे को वे पूर्व में ही क्यों न जान गए होते? और क्यों न अनमने ढंग से दीक्षा लेने वालों को पहले ही जान जाते? अत: ऐसे-ऐसे अप्रामाणिक दावे विवेकशील व्यक्ति द्वारा स्वीकार नहीं किये जा सकते।

प्रश्न : 75 जब सतगुरु किसी को अपना शिष्य स्वीकार करते हैं, तो उसी पल शिष्यों के कर्मों की व्यवस्था बदल जाती है। उसका भाग्य पूरी तरह बदल जाता है। अब सतगुरु ही उसके कर्मों का स्वामी है। काल भी सतगुरू के अधीन है। पृ. 303।

टिप्पणी : एक तो यह व्यवस्था ईश्वर को अन्यायी सिद्ध कर देती है क्योंकि आपने उससे समान कर्मों वालों की फल-प्राप्ति में भेदभाव करा दिया। आपके मार्ग की इस व्यवस्था में एक तो कहीं ज्यादा अच्छे कर्म करके भी दु:ख भोगेगा, कोई दूसरा बुरे कार्य करते-करते भी सतगुरु रूपी सिफारिशी या दलाल के जरिये मोक्ष पा जाएगा....जैसे कि कोई अयोग्य व्यक्ति आजकल सिफारिश से सरकारी पद, नौकरी पा जाता है; वैसा न्यायकारी, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ परमपिता ऐसा कदापि नहीं कर सकते।

दूसरा जो आपने कहा कि आपके शिष्यों के भाग्य-कर्म बदल जाते हैं तो प्रश्न 67 में आपने क्यों कहा कि उनकी भी मुक्ति में चार-पाँच जन्म लग सकते हैं। और जो तथाकथित-काल भी सतगुरु के अधीन होता तो क्या वह काल सतगुरु को रोग, शोक, बुढ़ापा, मृत्यु दे पाता? कौन-किसके अधीन हुआ-विवेक से निर्णय करें?....और यह भी कि जो ये गुरु उस परमेश्वर के प्रतिनिधि हों तो सतगुरुओं की पूरी मण्डली भारत में ही उतार कर क्या परमात्मा ने चीन, रूस, अरब, अमेरिकादि से अन्याय नहीं किया? अरे! यह सब ठगी का जाल है-विद्या बिना लोग यूं ही फंसते-फंसाते रहेंगे।

प्रश्न : 76 सतगुरु हमारे कर्मों का बोझ कुछ अपने ऊपर ले लेते हैं। पृ. 364

टिप्पणी : एक तो सतगुरु के सन्त बनने से पहले के व गृहस्थादि के अपने कर्मों का हिसाब, फिर लाखों शिष्यों के कुछ कर्म-बोझ अपने ऊपर ले लिया-यह तो निश्चित है कि तथाकथित गुरु के "प्रारब्ध-कर्म" तो भंयकर रूप से बिगड़ जायेंगे। फिर वह खुद क्या मोक्ष पाएंगे या क्या दिलांएगे?

और फिर पृ. 368 पर ईसाई-सन्दर्भ में खुद इस सिद्धान्त का खण्डन कर देते हैं-अगर हजरत ईसा सूली पर चढ़कर संसार के ऋण का भुगतान कर सकते, तो न्याय सिद्धान्त कार्यशील न रहता। इस तरह रचयिता खुद अपने बनाये न्यायादि नियमों का खंडन कर देता। अगर वे पाप अपने ऊपर ले लेते तो न्याय की योजना तहस-नहस हो जाती। अब यही तर्क आप पर भी तो लागू होता है जो आप इस प्रश्न में अपने शिष्यों के कर्मों का कुछ बोझ अपने ऊपर लेने का दावा करते हैं।

प्रश्न :77 कर्म-फल के सिद्धान्त के अनुसार हर जीव, हर प्राणी, सृष्टि की शुरुआत के मूल पदार्थ से लेकर मानव मस्तिष्क तक, अमीबा जीव से लेकर फरिश्तों तक, मन और आत्मा से लेकर तीनों लोकों के रचयिता तक को हर कर्म का फल हिसाब-किताब के अनुसार जरूर भुगतना पड़ेगा। यही कर्म सिद्धान्त है। पृ. 354

टिप्पणी : सृष्टि की शुरूआत का एक मूल पदार्थ अर्थात् कारण-रूप प्रकृति या परमाणु मन और मस्तिष्क तो जड़-पदार्थ हैं। जड़ पदार्थ स्वयं कर्म करने में असमर्थ होते हैं तो उन्हें फल किसका-क्यों कैसा? इसी तरह प्रकृति से मांसाहारी हिंसक पशु-पक्षी, कीट-पतंगे, पेड़-पौधे आदि के क्या अच्छे, क्या बुरे कर्म और क्या फल हो?

अरे सत्य-सिद्धान्त तो वेद का ही है कि कर्मयोनि सिर्फ मनुष्य की है। मनुष्य योनि में ही मोक्ष या दु:ख-फल जनक कर्म हो सकते हैं। बाकी योनियाँ तो केवल भोग योनियाँ हैं। इन योनियों में मोक्ष-सुखदायक कर्म नहीं किए जा सकते।

आप पृष्ठ-क्रमांक 377 पर कहते-सतगुरु खुद कर्मों के दायरे से ऊपर होते हैं। और विडम्बना देखिये कथित तीन लोकों का रचयिता भी बाहर नहीं.....अब बताइये कथित सतगुरु जन्म-रोग दुर्घटना-मृत्यु आदि दुख बिना कर्मों के क्यों सहते-भोगते हैं? अरे! झूठ पे महाझूठ बोले जा रहे हो? तनिक भी लज्जा नहीं आती! अरे किसी तथाकथित पूर्ण ज्ञानी को अधूरा सिद्ध करने को, किसी कथित सत्य मार्ग को झूठा साबित करने को और कितने स्पष्ट झूठ पकड़ने होते हैं?

प्रश्न :78 धार्मिक मार्गदर्शक किसी ग्रन्थ में अपने आदेशों को लिख देते हैं और उनका उल्लंघन करने के लिए दंड निश्चित कर देते हैं। वे सभी इस विषय को यह कहकर समाप्त कर देते हैं कि ईश्वर की इच्छा में रहो। कौन बता सकता है कि ईश्वर की इच्छा क्या है? अमर हम उनके सामर्थ्य पर शंका प्रकट करते हैं तो वे हमें अधर्मी मानते हैं। पृ. 389

टिप्पणी : जब परमात्मा ने इस जटिल सृष्टि और कुशल बुद्धि युक्त मानव की रचना की तो अपनी इस रचना के सुचारू संचालन के लिए कुछ नियम-कानून, मैन्युअल, संविधान भी तो दिया होगा; नहीं तो वह ईश्वर न्यायकारी-गुण-स्वभाव से विहिन हो जाएगा।

अब वेद, बाईबिल, कुरानादि में से कौन सी रचना, ईश्वर की रचना, उसकी इच्छा या संविधान कही जा सकती है यही प्रश्न महत्वपूर्ण रह जाता है-उसके होने या महत्व पर कोई शंका नहीं रही है। सभी की तुलनात्मक परीक्षा से स्पष्ट हो जाता है कि वेद ही एक सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, निराकार, दयालु, न्यायकारी रचनाकार की रचना हो सकती है।

जहाँ तक सामर्थ्य पर शंका की बात है-अगर कोई आप के सामर्थ्य पर शंका प्रकट करे तो आपका जबाव या पक्ष सिद्धि भी तो अवैज्ञानिक व आधारहीन ही होता है। आप अद्वितीयपन के दावों पर दावे करते जाते हैं। बस दावे-कोई तर्क-विवेक की बात करे तो अद्वितीय चुप्पी या टाल-मटौल। आप कथित पूर्ण ज्ञानियों को आपकी मंडली के दक्षिण-भारतीय 'सन्त' नित्यानन्द स्वामी जैसों की असलियत का विडियो मंजर पर आने से पहले क्यों नहीं पता चलता, जो आप जैसों पर शंका न हो और क्यों न हो।

प्रश्न : 79 युगों-युगों से इस संसार में दुनियावी इच्छओं, विषय-वासनाओं से छुटकारा पाने का केवल यही अर्थात् 'शब्द-धुन' औषधि (उपाय, साधन) रही है। शब्द-धुन से ही हम दुनिया से विरक्त हो सकते हैं।....पृ. 441 यदि मनुष्य यह समझ जाएँ कि सांसारिक विषय-भोग खोखले और व्यर्थ हैं तो समझो वे सतगुरु से मिलाप व शब्द-धुन से जुड़ने को तैयार हैं। पृ. 441

टिप्पणी : आप एक तरफ तो कह रहे हैं कि विषय-भोगों, इच्छाओं से छुटकारे के लिए यम-नियमादि अभ्यास उपयुक्त नहीं-एकमात्र साधन "शब्द-धुन" ही सफल साधन है। दूसरी ओर कह रहे हो कि "शब्द-धुन" से जुड़ने के लिए पहले विषय-भोग छोड़ने होंगे। अत: आपने ये तो बताया ही नहीं कि विषय-भोग (इच्छाएं) छूटें कैसे? अरे! एक "अप्राप्त" को प्राप्त करने का एकमात्र-सफल साधन दूसरा "अप्राप्त" कैसे हो सकता है?...यह तो ऐसे ही हुआ जो कहो कि सतगुरु नशा, शराब आदि छुड़ाने का मन्त्र या आशीर्वाद देते हैं। परन्तु सतगुरु से मिलाप या मन्त्र दान तभी मिले या फले जो नशों की व्यर्थता को सम्बन्धित व्यक्ति पूर्णत: समझ चुका हो, छोड़ने का पक्का निश्चय कर चुका हो। इस तरह भ्रम-युक्त सिद्धान्त देकर भोले लोगों को उलझाए रखते हो। वे बेचारे खुद को दोषी मानते रहते और कुछ भी उपलब्ध नहीं कर पाते; जबकि मूल दोष उनको दिए मार्ग में ही होता है।

क्रमश:

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

मैं आर्य निर्मात्री सभा के सत्र से बहुत प्रभावित हुआ। जो जाति-पाति के बन्धन को मिटाकर पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाने का कार्य कर रहा है। यह संगठन मानव जाति को राष्ट्र के प्रति अपने कतर्व्यों एवं समाज में व्याप्त अनेक बुराईयों को जड़ से मिटाने के लिए पूर्णत: तत्पर है। मेरा विश्वास है कि इसकी करनी एवं कथनी में कोई अन्तर नहीं है। यह एकमात्र संगठन है जो वेद-विद्या का ज्ञान देता है और ईश्वर की सता को फिर से वेदों के माध्यम से सथापित करना चाहता है। मैं तन-मन व धन से अपना सब कुछ इसके लिए लगाने के लिए जीवनपर्यन्त तैयार हूँ।

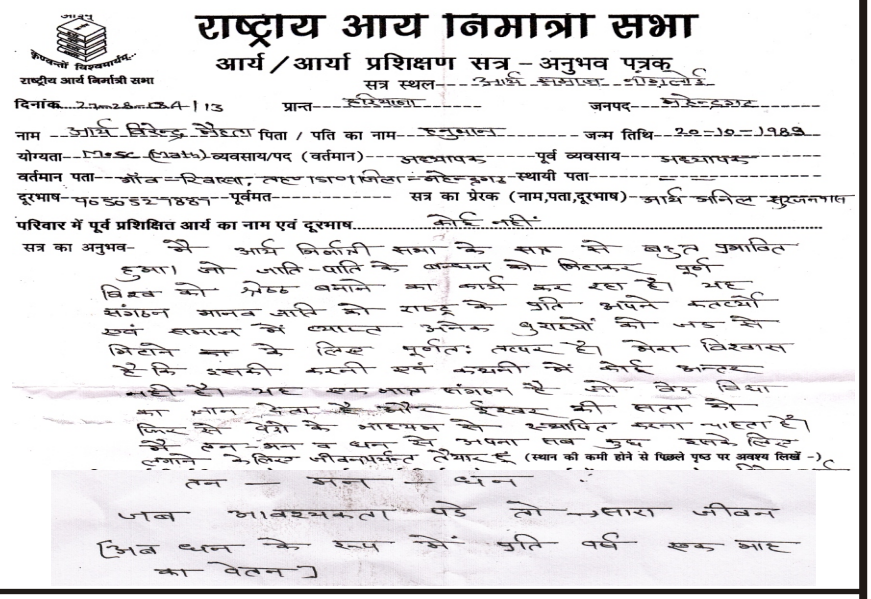

तन-मन-धन, जब आवश्यकता पड़े तो-सारा जीवन अब धन के रूप में प्रति वर्ष एक माह का वेतन

आर्य विरेन्द्र मेहता, आयु-25 वर्ष, योग्यता -एम.एस.सी..
कार्य- अध्यापन, गांव-रिवासा, जिला-महेन्द्रगढ़, हरियाणा

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र - अनुभव पत्रक

मैं पुरुषोत्तम कुमार मुझे इस दो दिन के शिविर में आना बहुत अच्छा लगा। मैं इस कार्यक्रम से देश के प्रति जागरूक हुआ हूँ व मुझे इससे पहले देश की प्रतिरक्षा करने का नहीं पता था व मैं अब वेद, सत्यार्थ-प्रकाश, आदि वेदों, ग्रन्थों का प्रचार व प्रसार करूँगा और मैं इस शिविर से इतना शिक्षित हुआ हूँ कि मैं श्री राम व श्री कृष्ण जी के जीवन की तरह अपना जीवन देश के प्रति लगाऊँगा और अपनी बहनों, माताओं व देश की रक्षा करूँगा।

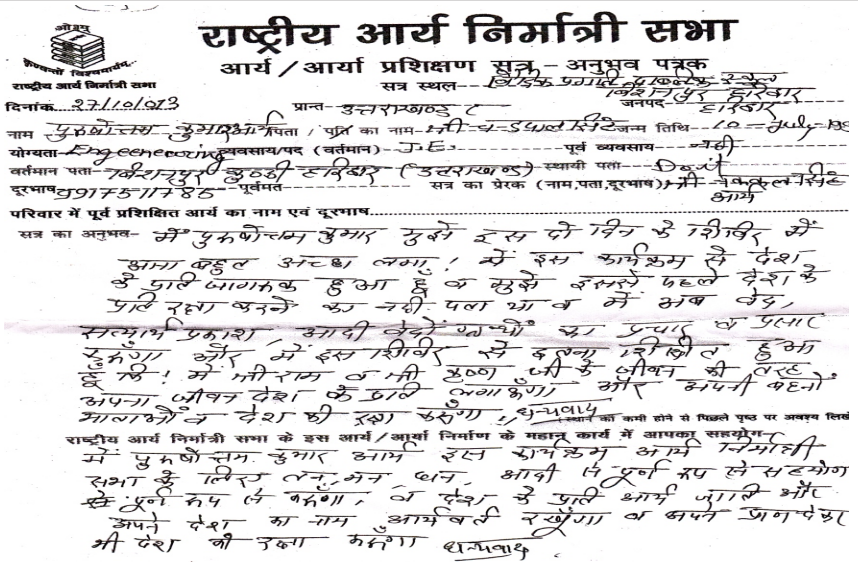

मैं पुरुषोत्तम कुमार आर्य इस कार्यक्रम आर्य निर्मात्री सभा के लिए तन-तन-धन आदि से पूर्ण रूप से सहयोग करूँगा व देश के प्रति आर्य जाति और अपने देश का नाम आर्यावर्त रखूँगा व अपने प्राण देकर भी देश की रक्षा करूँगा।

पुरुषोत्तम कुमार आर्य, आयु-22 वर्ष, योग्यता-इर्जीनियर
बिशनपुर कुण्डी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र - अनुभव पत्रक

1. मेरे जीवन का प्रथम शुभअवसर आर्यसमाज की रीति-नीति जानने का सौभाग्य मिला। 2. आचार्य श्री राजेश जी द्वारा प्रशिक्षण में विषय की प्रस्तुति तर्क आधारित वेदानुकूल, बुद्धि की महत्ता से लेकर राष्ट्र की अवधारणा तक प्रेरणादाई रही, 3. प्रश्नोत्तर कार्य कार्यक्रम से कक्षा रूचिकर बनी रही, किसी को भी अपने विचार रखने काअवसर प्रदान किया गया।

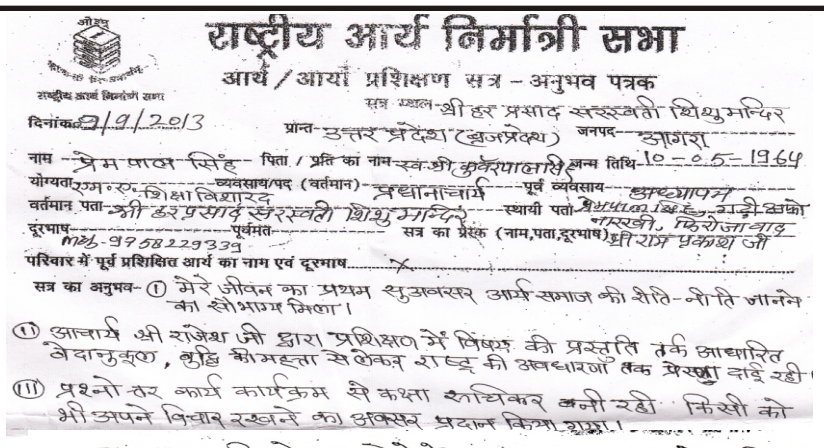

अध्यापनवृत्ति से जुड़ा होने के कारण अपना सहयोग विचारों के प्रचार-प्रसार में आर्य निर्माण मैं सहयोग कर सकता हूँ। साथ-साथ समान विचार वाले सनातन पद्धति के पंथों के साथ विचारों के आदान-प्रदान कर राष्ट्रीय एकता के लिये प्रयास में सहयोग।

प्रेम पाल सिंह, आयु-50 वर्ष, योग्यता-एम. ए. (शिक्षा)
पद- प्रधानाचार्य, गांव टीक डा. फतेहपुर पुट्ठी, बड़ौत, उ. प्र.

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र - अनुभव पत्रक

उत्तम क्वालिटी के ओ३म् ध्वज व आर्यावर्त्त हवन सामग्री की प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें-

आर्य मार्किट, शिवाजी कॉलोनी, रोहतक

-सम्पर्क सूत्र- 9466904890

आर्य वैवाहिक सभा (रजि.)

Arya Mantrimonial Bureau, Email- aryavivah65532@gmail.com

आर्य प्रशिक्षण सत्रों में प्रशिक्षित विवाह योग्य युवक व युवतियों के अभिभावक सम्पर्क करें।

प्रबन्धक- आर्य संजीव हिसार,
सम्पर्क सूत्र- 9812066846

संध्या काल

फाल्गुन मास, बसन्त ऋतु, कलि-5114, वि. 2070	चैत्र मास, बसन्त ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(15 फरवरी 2014 से 16 मार्च 2014)	(17 मार्च 2014 से 15 अप्रैल 2014)
प्रात: काल: 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)	प्रात: काल: 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)
सांय काल: 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 P.M.)	सांय काल: 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 P.M.)

आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16

आर्य निर्माण राष्ट्र निर्माण

जनपदीय आर्य महासम्मेलन, टटीरी बागपत,(2 फरवरी 2014) में श्रद्धेय आचार्य परमदेव मीमांसक जी व अन्य आर्य विद्वान्

आर्य प्रशिक्षण सत्र (08-09 फरवरी) आर्य समाज, भून गांव मैनपुरी, उ. प्र., में आचार्य महेश जी व आचार्य देवेन्द्र जी

आर्य प्रशिक्षण सत्र (08-09 फरवरी) आर्य समाज, न्यू पालम विहार गुड़गांव में आचार्य जितेन्द्र जी व आचार्य सतीश जी

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् पत्रिका की सदस्यता हेतु 100 रुपए द्विवार्षिक शुल्क मनीआर्डर से प्रांतीय कार्यालय के पते पर भेजें, स्थानीय राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सदस्यों के पास भी शुल्क जमा कर रसीद ले सकते हैं। पूरा पता अवश्य लिखें, न पहुंचने पर दूरभाष से कार्यालय में सूचना दें। जिन सदस्यों की सदस्यता एक वर्ष से अधिक पुरानी है वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करवा लेवें।

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक एवं सम्पादक आचार्य हनुमत् प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित एवं सुदर्शन प्रैस, दिल्ली-87 से मुद्रित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।